अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना क्या है?

शिक्षा किस प्रकार अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना का विकास करने में सहायक हो सकती है?

अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना के बाधक तत्वों का उल्लेख कीजिए।

अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना का तात्पर्य विश्वबन्धुत्व, विश्व मैत्री तथा नागरिकता पर आधारित उस भावना से है जिसके अनुसार कोई व्यक्ति अपने को केवल अपने राष्ट्र की इकाई ही नहीं बल्कि विश्व की इकाई समझने लगता है और अपने राष्ट्र के संकीर्ण हितों को भुलाकर विश्व के सभी राष्ट्रो तथा उसके निवासियों के कल्याण की आकाक्षा करने लगता है।

शिक्षा अन्तर्राष्ट्रीयता के लिए बालकों को इस प्रकार शिक्षित करती है जिससे बालक समझने लगे कि सम्पूर्ण मानव जाति एक है और विश्व एक इकाई है। यह एक ऐसी भावना है जो एक राष्ट्र के निवासियों से दूसरे राष्ट्र के निवासियों के प्रति मैत्री तथा बन्धुत्व का भाव उत्पन्न करती है। उन्हें उनके दुख-सुख में साथ देने के लिए प्रेरित करती है। उनमें विश्व के सभी राष्ट्रों का कल्याण करने की आकांक्षा उत्पन्न करती है। उनमें अपने राष्ट्र का ही नहीं बल्कि विश्व का

नागरिक समझने की भावना को भरती है। युनेस्को (UNESCO) के प्रधान निरदेशक डा० वाल्टर एच0 जा0 लेब्स ने अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना का अर्थ प्रस्तुत करते हुए लिखा है, "सक्षप में अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना का तात्पर्य आलोचनात्मक निरीक्षण करने तथा लोगों को राष्ट्रीयता या सस्कृति पर बिना ध्यान दिए हुए उनके व्यवहार की उत्तमताओं को एक-दूसरे से प्रशंसा करने की योग्यता से है। ऐसा करने के लिए मनुष्य को इस योग्य होना चाहिए कि वह

समस्त राष्ट्रीयताओं, सस्कृतियों एवं प्रजातियों का इस पृथ्वी पर रहने वाले लोगों में समान रूप से निरीक्षण कर सके।

अन्तर्राष्ट्रीय सद्भाव के लिये शिक्षा-

अन्तर्राष्ट्रीय सद्द्भावना के विकास में शिक्षा बहुत अधिक सहायक है। परन्तु शिक्षा किस प्रकार की हो तथा उसके उद्देश्य क्या हो यह प्रश्न महत्वपूर्ण है अतः इन प्रश्नों पर विचार करना महत्वपूर्ण है। कुछ प्रमुख विद्वानों ने इस सम्बन्ध में निम्नलिखित बातों पर बल दिया है-

1. बालक एवं बालिकाओं को समाज के निर्माण में सक्रिय रूप से भाग लेने के लिए तैयार किया जाय।

2. उन्हें विश्व में एक साथ रहने के लिए आवश्यक बातों का ज्ञान प्रदान किया जाय।

3. उन्हें अपने स्वयं के सांस्कृतिक एवं राष्ट्रीय पक्षों को महत्व न देने की शिक्षा प्रदान की जाय।

4. उन्हें संसार के समस्त व्यक्तियों के रहन-सहन के ढंगों और आकांक्षाओं से परिचित कराया जाय।

5. उन्हें सब स्थानों के लिए व्यक्तियों का एक-दूसरे के प्रति व्यवहार का आलोंचनात्मक निरीक्षण करने के लिए प्रशिक्षण दिया जाय ।

6. उनमें सभी राष्ट्रीयताओं, संस्कृतियों एवं प्रजातियों के व्यक्तियों को समान समझने के लिए भावना का सृजन किया जाय।

उपर्युक्त उद्देश्यों के अतिरिक्त विद्यार्थियों के अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना के विकास के लिए शिक्षा के कुछ अन्य उद्देश्य अधोलिखित हैं-

1. विद्यार्थियों को विश्व की नागरिकता के लिए तैयार किया जाय ।

2. उनकी संकीर्ण एवं अच्छी राष्ट्रीयता को समाप्त किया जाय ।

3. उनकी लेखन चिंतन, निर्णय, लेखन तथा भाषण की योग्यता का विकास किया जाय।

4. उन्हें उन समस्त आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक तथा सांस्कृतिक तत्वों की पूर्ण जानकारी कराई जाय जिसके कारण विश्व के समस्त राष्ट्र एक-दूसरे पर आधारित हैं।

5. उन्हें उन समस्त आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक तथा सांस्कृतिक तत्वों की पूर्ण जानकारी कराई जाए जिसके कारण विश्व के समस्त राष्ट्र एक-दूसरे पर आधारित हैं।

6. उन्हें सांस्कृतिक विभिन्नताओं में मानव हित के लिए कल्याणकारी समाज तत्वों को खोजने के लिए प्रोत्साहित तथा प्रशिक्षण प्रदान किया जाये।

7. उन्हें विश्व की उन सभी समस्याओं से परिचित कराया जाए जो सभी देशों के सामान्य रूप से प्रतिबंधित हैं और उनका समाधान करने के लिए जनतंत्रीय पद्धतियों का ज्ञान कराया जाए।

8. उन्हें विश्व समाज के निर्माण के लिए मूल्यों एवं उद्देश्यों में आस्था रखने की शिक्षा प्रदान की जाए।

9. उन्हें राष्ट्रों की उपलब्धियों का आदर तथा मूल्यांकन करना सिखाया जाए जिससे कि मानव संस्कृतियों तथा विश्व नागरिकता का विकास हो।

यद्यपि अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना के विकस के लिए रेडियो, टेलीवि वन, चलचित्र, पत्र तथा भाषण इत्यादि अनेक महत्वपूर्ण साधन हो सकते हैं। किन्तु इन साधनों में शिक्षा का सर्वश्रेष्ठ स्थान है। इसका सबसे प्रमुख कारण यह है कि जिन संस्थाओं के द्वारा शिक्षा प्रदान की जाती है, वे सर्वोत्तम सांस्कृतिक तत्वों का प्रतिनिधित्व करती हैं और निष्पक्षता 'यूनेस्को' द्वारा प्रकाशित पत्रिका 'टुवार्डस वर्ल्ड अण्डरस्टैंडिंग' में लिखा गया है, "विद्यालय आस-पास की संस्कृति में निहित सर्वोत्तम तत्वों को व्यक्त कर सकते हैं और साधारणतः करते भी हैं। वे ईमानदारी एवं निष्पक्षता से समाज के सामान्य मूल्यों को काफी ऊँचा उठाने का प्रयत्न करते हैं।"

अन्तर्राष्ट्रीय अवबोध के बाधक तत्व-

अन्तर्राष्ट्रीय अवबोध के विकास में कुछ बाधक तत्व भी हैं। ये निम्नलिखित हैं-

(1) कट्टर राष्ट्रवाद- कट्टर राष्ट्रवाद अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना के विकास में बाधक होता है कट्टर राष्ट्रवादी लोग अपने देश को सर्वोपरि मानते हैं तथा दूसरे देशों को हीन समझकर उनकी उपेक्षा करते हैं।

(2) कट्टर धार्मिकता- कट्टर धार्मिकता भी अन्तर्राष्ट्रीयता अवबोध में बाधक है। धर्मान्ध व्यक्ति सदैव दूसरे धर्मों की उपेक्षा करता है जिससे दूसरे धर्म के लोगों से उसका विरोध हो जाता है।

(3) मानव मूल्यों का अभाव- मानवतावादी मल्यों का अभाव होने पर भी अन्तर्राष्ट्रीय भावना को ठेस लगती है। संकीर्ण मूल्य तंत्र मानवतावादी मूल्यों के विरोधी होते हैं।

(4) साम्राज्यवादी प्रवृत्तियाँ- अधिकांश देशों के अन्तर्गत साम्राज्यवादी प्रवृत्तियाँ पायी गयी हैं। ये देश दूसरे देशों पर अपना आधिपत्य जमाना चाहते हैं तथा विश्व बन्धुत्व के लिए खतरा उत्पन्न करते हैं।

(5) आर्थिक प्रतिस्पर्धा- देश की आर्थिक प्रतिस्पर्धा भी अन्तर्राष्ट्रीय अवबोध में बाथक हैं। प्रतिस्पर्धा करने वाले देश दूसरे देशों को नीचा दिखाने की कोशिश करते हैं।

(6) आर्थिक असन्तुलन- विभिन्न देशों का आर्थिक असन्तुलन भी अन्तर्राष्ट्रीयता की भावना को प्रभावित करता है। अधिकांशतः देखा गया है कि धनी देशों के लोग गरीब देश के लोगों को हेय समझते हैं।

(7) जातीयता- जातीयता की भावना एवं जातीय संघर्ष भी मानवीय सहयोग की भावना के लिए घातक है। अफ्रीकी देशों में होने वाली जातीय दंगे इस प्रकार की भावना के लिए बाधक हैं।

शिक्षाशास्त्र

महत्वपूर्ण लिंक

- ई-लर्निंग का अर्थ | ई-लर्निंग की प्रकृति एवं विशेषतायें | ई-लर्निंग के विविध रूपों एवं शैलियों का उल्लेख
- ओवरहेड प्रोजेक्टर पर संक्षिप्त लेख | ओवरहेड प्रोजेक्टर का उपयोग | ओवरहेड प्रोजेक्टर की सीमायें
- आगमन विधि का अर्थ | निगमन पद्धति का अर्थ | आगमन विधि तथा निगमन पद्धति के गुण एवं दोष
- शिक्षा का अर्थ | शिक्षा की प्रमुख परिभाषाएँ | शिक्षा की विशेषताएँ | Meaning of education in Hindi | Key definitions of education in Hindi | Characteristics of education in Hindi
- शिक्षा की अवधारणा | भारतीय शिक्षा की अवधारणा | Concept of education in Hindi | Concept of Indian education in Hindi
- शिक्षा के प्रकार | औपचारिक, अनौपचारिक और निरौपचारिक शिक्षा | औपचारिक और अनौपचारिक शिक्षा में अन्तर
- शिक्षा के अंग अथवा घटक | Parts or components of education in Hindi
- शिक्षा के विभिन्न प्रकार | शिक्षा के प्रकार या रूप | Different types of education in Hindi | Types or forms of education in Hindi
- निरौपचारिक शिक्षा का अर्थ तथा परिभाषा | निरौपचारिक शिक्षा की विशेषताएँ | निरौपचारिक शिक्षा के उद्देश्य
- शिक्षा के प्रमुख कार्य | शिक्षा के राष्ट्रीय जीवन में क्या कार्य | Major functions of education in human life in Hindi | What work in the national life of education in Hindi
- वर्धा बुनियादी शिक्षा | वर्धा बुनियादी शिक्षा के सिद्धांत | बुनियादी शिक्षा के उद्देश्य | वर्धा शिक्षा योजना के गुण - दोष
- राज्य के शैक्षिक कार्यों का वर्णन | शैक्षिक अभिकरण के रूप में राज्य के कार्यों का वर्णन कीजिये
- शैक्षिक अभिकरण के रूप में विद्यालय के कार्य | शैक्षिक अभिकरण के रूप में विद्यालय के कार्यों का वर्णन कीजिये
- विद्यालय को शिक्षा का प्रभावशाली अभिकरण बनाने के उपाय | विद्यालय को शिक्षा का प्रभावशाली अभिकरण बनाने के उपायों का वर्णन कीजिये
- शैक्षिक अभिकरण के रूप में परिवार के कार्य | Family functions as an educational agency in Hindi
- नवाचार का अर्थ | नवाचारों को लाने में शिक्षा की भूमिका | नवाचार की विशेषतायें
- नवाचार के मार्ग में अवरोध तत्व | शिक्षा में 'नवीन प्रवृत्तियों (नवाचार) के मार्ग में अवरोध तत्वों' का वर्णन

- दर्शन का अर्थ | दर्शन की परिभाषाएं | दर्शन का अध्ययन क्षेत्र
- गांधी जी का शिक्षा दर्शन - आदर्शवाद, प्रयोजनवाद और प्रकृतिवाद का समन्वय है।
- शिक्षा में महात्मा गाँधी का योगदान या शैक्षिक विचार | गाँधीजी के शिक्षा दर्शन से आप क्या समझते हैं?
- विवेकानन्द का शिक्षा दर्शन शिक्षाशास्त्री के रूप में | विवकानन्द के अनुसार शिक्षा के पाठ्यक्रम और शिक्षण विधियां
- मानव निर्माण शिक्षा में स्वामी विवेकानन्द का योगदान | मानव निर्माण शिक्षा के प्रमुख उद्देश्य
- आदर्शवाद में शिक्षा के उद्देश्य | आदर्शवाद में शिक्षा के सम्प्रत्यय
- जॉन डीवी के प्रयोजनवादी शिक्षा | जॉन डीवी की प्रयोजनवादी शिक्षा का अर्थ
- रूसो की निषेधात्मक शिक्षा | निषेधात्मक शिक्षा क्या है रूसो के शब्दों में बताइये
- आदर्शवाद की परिभाषा | आदर्शवाद के मूल सिद्धान्त
- सुकरात का शिक्षा दर्शन | सुकरात की शिक्षण पद्धति
- प्रकृतिवाद में रूसो एवं टैगोर का योगदान | प्रकृतिवाद में रूसो का योगदान | प्रकृतिवाद में टैगोर का योगदान
- प्रकृतिवाद क्या है | प्रकृतिवादी शिक्षा की प्रमुख विशेषताएँ | प्रकृतिवादी पाठ्यक्रम के सामान्य तत्व
- प्रकृतिवाद में रूसो का योगदांन | रूसो की प्रकृतिवादी विचारधारा
- प्रयोजनवाद का अर्थ | प्रयोजनवाद दर्शन की प्रमुख विशेषताओं का वर्णन
- प्रयोजनवाद के शिक्षा के उद्देश्य | प्रयोजनवाद तथा शिक्षण-विधियाँ | प्रयोजनवाद के अनुसार शिक्षा-पाठ्यक्रम
- प्रयोजनवाद और प्रकृतिवाद मे तुलना | प्रकृतिवादी दर्शन की विशेषताएँ | प्रयोजनवाद की विशेषताएं
- आधुनिक शिक्षा पर प्रयोजनवाद के प्रभाव का उल्लेख
- आधुनिक शिक्षा पर प्रकृतिवाद का प्रभाव | आधुनिक शिक्षा पर प्रकृतिवाद क्या प्रभाव पड़ा
- प्रयोजनवाद में पाठ्यक्रम के सिद्धान्त | प्रयोजनवादी पाठ्यक्रम पर संक्षिप्त लेख | प्रयोजनवाद में पाठ्यक्रम की विषयवस्तु का वर्णन
- ओशो का शैक्षिक योगदान | ओशो के शैक्षिक योगदान पर संक्षिप्त लेख
- फ्रेरा का शिक्षा दर्शन | फ्रेरा का शैक्षिक आदर्श | Frara's education philosophy in hindi | Frara's educational ideal in hindi
- इवान इर्लिच का जीवन परिचय | इर्लिच का शैक्षिक योगदान | Ivan Irlich's life introduction in hindi | Irlich's educational contribution in hindi
- जे0 कृष्णमूर्ति के अनुसार शिक्षा के उद्देश्य | जे0 कृष्णमूर्ति के अनुसार शिक्षा के कार्य
- जे. कृष्णामूर्ति के दार्शनिक विचार | जे. कृष्णामूर्ति के दार्शनिक विचारों का वर्णन
- राष्ट्रीय एकता व भावात्मक एकता का सम्बन्ध | भारत में राष्ट्रीय एकता का संकट | निवारण हेतु कोठारी आयोग के सुझाव
- राष्ट्रीय एकता के मार्ग में मुख्य बाधाएं | शिक्षा द्वारा राष्ट्रीय एकता की बाधाओं को दूर करने के उपाय
- मूल्य शिक्षा के विकास में परिवार की भूमिका का वर्णन | Describe the role of family in the development of value education in Hindi
- मूल्य शिक्षा का अर्थ | मूल्य शिक्षा की आवश्यकता | मूल्य शिक्षा की अवधारणा
- भावनात्मक एकता के विकास में शिक्षा किस प्रकार सहायक हो सकती है? | बच्चों को भावनात्मक एकता के लिए शिक्षा देना क्यों आवश्यक है?
- पर्यावरण शिक्षा का अर्थ | पर्यावरण शिक्षा के लक्ष्य | पर्यावरण शिक्षा के उद्देश्य एवं पाठ्यक्रम
- भावात्मक एकता के लिए भावात्मक एकता समिति द्वारा दिये गये सुझावों का वर्णन कीजिए।

- राष्ट्रीय एकता का अर्थ | राष्ट्रीय एकता की प्राप्ति के लिए उपाय | राष्ट्रीय एकीकरण में शिक्षक की भूमिका
- भावात्मक एकता का अर्थ | भावात्मक एकता के स्तर | भावात्मक एकता के विकास में शिक्षा के कार्य | राष्ट्रीय एकता भावात्मक एकता के सम्बन्ध

sarkariguider.com